BIRJU MAHARAJ

Birju Maharaj, doyen of "Lucknow Kathak"
Dancer, Guru, Choreographer, Singer (Lucknow)

बिरजू महाराज

BIRJU MAHARAJ

BIRJU MAHARAJ, the brilliant torch-bearer of the LUCKNOW KATHAK-traditions of the KALKA-BINDA (Maharaj Kalka Prasad, and Maharaj Bindadin, the grandfather and grand-uncle respectively of Birju) gharana is perhaps the most versatile, creative, and world-renowned Kathak dancer-cum-guru that this gharaana has so far produced. He is truly "a complete musician" because he is not only an outstanding dancer, a conscientious guru, a constantly creative choreographer, and a melodious vocalist with a rich repertoire of Bindadin's compositions, but also a fine percussionist with mastery over a number of instruments like Tabla, Naal, Dholak, Pakhawaj, and so on: He has won accolades all over the world as a superb solo dancer, and also as a director and choreographer of a number of highly rated Kathak Ballets which have now become the rich repertory of the Kathak Kendra, Delhi which he has headed since the last many decades. He has groomed a whole galaxy of young Kathak dancers from all over India and from various foreign countries such as U.S.A, Italy, France, Germany, Bangla Desh, Japan etc. Among those who have partnered him in his duets on stage have been Kumudini Lakhia (a choreographer par excellence, and a famous dancer), Bharati Gupta, and Saswati Sen, the most accomplished and best disciple of his.

Born on Basant Panchami day, in 1937 in his ancestral home in Lucknow, he was aptly named BRIJ MOHAN MISRA and brought up in an atmosphere filled with music and dance throughout the day and night. Numerous great singers, instrumentalists, and dancers used to visit the famous home of Maharaj Bindadin and his brother in order to learn at the feet of "Binda" or to watch his dance and pay their respects. Thus Briju was soaked in music and dance right from his early childhood. When his father became a court-dancer of Rampur, Briju stayed with him and received intensive training during the first 9 years of his life, but then tragedy struck and Achchan Maharaj suddenly passed away. Just as Achchan Maharaj had trained up his younger brothers Shambhu

Maharaj and Lachchu Maharaj after their father's death, similarly young Birju received training from his uncles who have enriched Kathak with their contributions. Birju has not only preserved his family traditions as a sacred heritage entrusted to him, but also enriched Lucknow Kathak with his manifold contributions, and given it a new dimension through his numerous fascinating group-compositions and Kathak ballets. The pioneering choreographic work of Madam Menaka, the eloquent abhinaya of "Abhinaya Samrat" Shambhu Maharaj, the elements of "Lasya" and grace in the dance of Lachchu Maharaj, and the various "chaals", "gats", and remarkable footwork of his own father have all inspired Birju to create fresh items all the time, and thus bring Kathak from the feudal to the modern age. Today Kathak has vast audiences everywhere, in India and abroad. His mother also was a great inspiration for Birju and she taught him a number of Binda's Thumris which were all stored in her memory. Recently he has published many of them with notations in a beautifully illustrated and artistic book entitled-"Ras Gunjan".

In Birju's dancing one can notice the confluence of the best elements of the Kalka-Binda traditions, and also the products of his constantly searching and creative artistic mind. His mastery over rhythms being extraordinary, his footwork is always impressive, and his *abhinaya* becomes doubly effective when he sings each line with feeling in his melodious voice and interprets each phrase with hand gestures and eye-expressions.

Birju was just in his twenties when he received the prestigious Central Sangeet Natak Akademy Award. Since then he has won a number of other coveted Awards and titles such as "Padmasri", "Padma Bhushan " and "Padmavibhushan". He is currently the Chairman of the Uttar Pradesh Sangeet Natak Akademy.

Pic. : **Rakesh Sinha**

Susheela Misra

Birju Maharaj doyen of "Lucknow Kathak"
- a Complete artiste

बिरजू महाराज

बिरजू महाराज "कालिका-बिन्दा" घराने की कथक परम्परा के प्रकाश - स्तंभ है। महाराज कालिका प्रसाद इनके पितामह तथा महाराज बिन्दादीन इनके चचेरे दादा थे। इस सुविख्यात घराने से संबधित अनेक विभूतियों में विरजू महाराज का स्थान संभवतः अद्वितीय है। बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न विश्व प्रसिद्ध नर्तक एवं गुरू हैं। वस्तुतः वे "*सम्पूर्ण कलाकार*" हैं। रस सिद्ध नर्तक एवं नैष्ठिकगुरू होने के साथ वे नृत्य नाटिकाओं के कुशल निरूपक एवं निर्देशक हैं। बिन्दादीन महाराज की एक से एक उत्कृष्ट रचनाओं का उनके पास अनमोल भंडार है। वे सुरीले गायक भी हैं, और बिन्दादीन महाराज की रचनाओं की अवतारणा बड़े ही मधुर रूप से करते हैं। वे तबला, नाल, ढोलक, पखावज आदि ताल-वाद्यों के वादन में भी महारत रखते हैं। भव्य एकल नर्तन से उन्होंने देश-विदेश में अपार ख्याति अर्जित की है। यही नहीं, उन्होंने अपनी उदात्त संकल्पना एवं कलात्मक विवेक से अनेकों नृत्य नाटिकाओं की रचना तथा उनका निर्देशन किया है। उनकी नृत्य-नाटिकायें दिल्ली के "कत्थक केन्द्र" में निधिरूप में संग्रहीत हैं। कई दशकों से वे इस केन्द्र के अध्यक्ष के पद पर आसीन है। अपने कुशल प्रशिक्षण से उन्होंने भारत के ही नहीं, इटली, फ्रांस, जर्मनी, बॉगलादेश, जापान आदि देशों की अनेक युवा प्रतिभाओं को कथक में पारंगत किया है। रंगमंच पर नर्तन में जिन प्रतिभाओं ने इनके साथ नृत्य किया है उनमें प्रमुख हैं नृत्य नाटिका-कला-कुशल एवं प्रसिद्ध नर्तकी कुमुदिनी लाखिया, भारती गुप्ता एवं शाष्वती सेन। शाश्वती सेन इनकी सर्वाधिक निपुण शिष्या हैं।

बिरजू महाराज का जन्म सन् १९३७ में बसन्त पंचमी के दिन लखनऊ में उनके पैतृक घर में हुआ था। नाम "ब्रज मोहन" उनके भावी व्यक्तित्व के सर्वथा अनुरूप सिद्ध हुआ। उनका लालन पालन ऐसे वातावरण में हुआ जो संगीत के सुरों और नूपुरों की रूनझुन से सदा मुखर रहता था। बिन्दादीन महाराज का प्रसिद्ध घर कलावन्तों और कलानुरागियों का तीर्थ स्थल था। उनसे नृत्य व संगीत की शिक्षा प्राप्त करने , या उनके नृत्य का आनन्द लेने, या उनके दर्शनार्थ, कितने ही महान व प्रख्यात गायकों, गायिकाओं नर्तकों एवं वादकों का जमघट लगा रहता था। संगीत औार नृत्य के इस रस-सिक्त परिवेश में बिरजू पूरी तरह तर बतर हो गये।

जब उनके पिता अच्छन महाराज रामपुर के दरबारी नर्तक बनें तो बालक बिरजू ने उन्हीं के साथ रहकर अपने जीवन के प्रथम नौ वर्षो तक उनसे प्रशिक्षण प्राप्त किया। तभी वज्रपात हुआ। अच्छन महाराज का निधन हो गया। परन्तु प्रशिक्षण चलता रहा। जिस प्रकार अच्छन महाराज ने अपने छोटे भाइयों शंभू महाराज और लच्छू महाराज को पिता के न रहने के बाद प्रशिक्षित किया था, उसी प्रकार

बिरजू के चाचा-युगल ने उन्हें प्रशिक्षित किया। दोनों चाचा-शंभू महाराज तथा लच्छू महाराज-का कथक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण अवदान है।

बिरजू महाराज ने अपने घराने की परम्परा को एक पवित्र उत्तराधिकार के रूप में सुरक्षित रखते हुए *''लखनऊ कथक''* को अपने विविध योगदान से समृद्ध भी किया है। अपनी अनेक चित्ताकर्षक वृन्द रचनाओं एवं नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से बिरजू महाराज ने *''लखनऊ कथक''* को नया आयाम दिया है। मैडम मेनका की अग्रणी प्रेरणा, अभिनय सम्राट शंभु महाराज के भावपूर्ण अभिनय, लच्छू महाराज के नृत्य के लास्य एवं लालित्य, तथा अपने पिता अच्छन महाराज की अनोखी ''चालें'' तथा उनके जटिल पद संचालन ने बिरजू महाराज को नित नई कृतियाँ सृजित करने में सदा प्रेरित किया है। इस प्रकार कथक को मध्ययुग से आधुनिक युग में प्रतिष्ठित करने का श्रेय बिरजू महाराज को जाता है। उन्हीं की बदौलत आज कथक को देश विदेश में सर्वत्र विशाल श्रोता समूह उपलब्ध हो रहे हैं।

बिरजू महाराज की प्रतिभा के विकास में उनकी माता श्री की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने अपनी स्मृति-कोश में संजोई बिन्दादीन महाराज की अनेक ठुमरियाँ बिरजू महाराज को सिखाईं। बिरजू महाराज ने हाल में ही उन ठुमरियों से बहुत सी ठुमरियों को स्वर-लिपि बद्ध कर एक कलात्मक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है-**''रस गुंजन''**।

बिरजू महाराज का नृत्य कालिका-बिन्दा घराने के उत्कृष्टतम तत्वों का संगम है- साथ में उनकी सतृत अन्वेषी एवं रचनात्मक मस्तिष्क की सूझ और उपज का भी उसमें मनोहारी समावेश होता है। लय-ताल के वे असाधारण स्वामी है तथा उनका पद-संचालन अति प्रभाव शाली होता है- और जब वे भाव अभिनय में प्रत्येक पंक्ति को बड़े भाव से अपने सुरीले कंठ से ढाल कर गाने के हर शब्द को अपने हस्ताभिनय तथा नेत्रों की भाषा से अभिव्यक्त करते हैं तो उनके अभिनय का आकर्षण द्विगुणित हो जाता है।

बिरजू महाराज अपनी आयु के बीसवें वर्ष में थे जब उन्हें केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी का गौरव पूर्ण पुरस्कार मिला। तबसे आजतक वे अनेकों पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं तथा अनेकों उपाधियों से अलंकृत हो चुके हैं, जिनमें प्रमुख है ''पद्म श्री'',पद्म भूषण ''पद्यम विभूषण'' आदि। सम्प्रति वे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष हैं।

सुशीला मिश्रा

हिन्दी अनुवाद : **ओम प्रकाश दीक्षित**
छाया चित्र : **राकेश सिन्हा**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित।